पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

राज्यपाल की पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' का संस्कृत प्रकाशन दिसम्बर तक

लखनऊ: 8 नवम्बर, 2017

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक के संस्मरण संग्रह 'चरैवेति! चरैवेति!!' का संस्कृत अनुवाद दिसम्बर माह के अंत तक भाषाओं की जननी कही जाने वाली भाषा संस्कृत में पाठकों तक पहुंचेगा। संस्मरण संग्रह 'चरैवेति! चरैवेति!!' का संस्कृत भाषा में अनुवाद प्रो0 राजेन्द्र मिश्रा पूर्व कुलपति सम्पूर्णान्नद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने किया है तथा उसकी प्रस्तावना सुप्रसिद्ध विद्वान एवं राज्यसभा के वरिष्ठ सदस्य डा॰ कर्ण सिंह ने लिखी है। राज्यपाल के संस्मरणों पर आधारित मराठी भाषी पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' का लोकार्पण 25 अप्रैल, 2016 को मुंबई में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फडनवीस द्वारा किया गया था। तत्पश्चात् 9 नवम्बर, 2016 को पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' का हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू एवं गुजराती भाषा में लोकार्पण राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी की उपस्थिति में किया गया जिसमें मंच पर उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी, लोकसभा अध्यक्ष सुश्री सुमित्रा महाजन, केन्द्रीय मंत्री श्री वेंकैया नायडू, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष एवं सांसद श्री शरद पवार वक्ता के रूप में विशेष रूप से उपस्थित थे। इसी क्रम में 11 नवम्बर, 2017 को राजभवन उत्तर प्रदेश में पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' के हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू प्रकाशन का लोकार्पण मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव, केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह व कांग्रेस के पूर्व मंत्री श्री अम्मार रिज़वी ने किया तथा 13 नवम्बर, 2016 को मुंबई में गुजराती भाषा में लोकार्पण केन्द्रीय मंत्री पुरषोत्तम रूपाला द्वारा किया गया।

पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' हिन्दी के साथ-साथ उर्दू में भी काफी लोकप्रिय रही। हिन्दी व उर्दू के अनेक विद्वानों ने राज्यपाल श्री राम नाईक को उनकी पुस्तक के संबंध में अपनी प्रतिक्रियाओं से लिखकर अवगत कराया है। पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' का जर्मन, बांग्ला, फारसी तथा सिंधी भाषा में भी अनुवाद कराने हेतु राज्यपाल श्री नाईक को प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। हाल ही में सुविख्यात एवं अत्यन्त लोकप्रिय उर्दू शायर श्री मुन्नवर राणा का राज्यपाल की पुस्तक पर लेख प्रदेश सरकार के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की उर्दू पत्रिका 'नया दौर' के नवम्बर 2017 के अंक में प्रकाशित हुआ है जिसकी अनेक लोगों ने सराहना की है।

अंजुम/ललित/राजभवन (418/5)